॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे देव ! हे सखा! हे मित्र! तू इस संसाररूपी राष्ट्र का स्वामी है। इस राष्ट्र को शान्तिदायक, महान और ऊँचा बना। विधाता ! यही नहीं हम संसाररूपी राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहते हैं। हम सबसे पूर्व चाहते हैं कि यह हमारा हृदयरूपी राष्ट्र है यह हर प्रकार से ऊँचा बना रहे। यह हमारी हृदयरूपी जो अयोध्या है इसमें वह राम विराजमान रहे जिस रामराज्य के ऊपर संसार व्याकुल होता चला जा रहा है। हे विधाता ! आज हम शरीर को वह अयोध्या चाहते हैं जिसमें रामराज्य हो जाये। हमारी यह अयोध्यारूपी नगरी ऊँची बन जाये और वह विधाता इस नगरी में ओत-प्रोत हो जाये। वह विधाता इस राष्ट्र का स्वामी बन जाये।

हे विधाता ! आज हम उस राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहते हैं जिस राष्ट्र में हमारा जन्म हो जो राष्ट्र देखो, हमारे शरीर का एक ऊँचा भाग हो। कैसे बनायेंगे? जब तक आपकी करुणा नहीं होगी, आपकी दी हुई प्रेरणा हमें नहीं मिलेगी। तब तक देखो हम इस संसार का, अपने शरीररूपी राष्ट्र का उत्थान किसी भी प्रकार नहीं कर सकते और न ही इसका निर्माण अच्छी प्रकार कर सकते हैं।

प्रभु ! हम अपना ही कल्याण नहीं चाहते, संसार का कल्याण चाहते हैं। जब संसार में रहने वाले प्राणियों का हृदय अयोध्या के तुल्य बन जाये, रामराज्य सबके हृदय में रमण कर जाये, उस काल में मुनिवरो ! देखो, शान्ति का प्रदर्शन हो जायेगा।

—पूज्यपाद गुरुदेव

अंक : 536 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 611
वर्ष : 45 44 समग्र वर्ष : 51

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. आत्मा का रहस्य		5-18
4. दार्शनिक चर्चाएँ		19-30
5. ऋषियों के उद्‌गार		31
6. Lord Krishna		32-37
7. दान, पुस्तकों की सूची व प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		38-42

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेदमन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' के रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है :-

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900
website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

।। ओ३म् ।।

आत्मा का रहस्य

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं और संसार के रचियता हैं और निर्माण में निर्माणीत कहा जाता है इसीलिए वह परमपिता परमात्मा प्रायः अनन्तता में निहित रहने वाले हैं। तो उस परमपिता परमात्मा का जो अनन्तमयी ज्ञान है, अनन्तमयी विज्ञान है और अनन्तमयी बेटा! यह संसार की यह प्रतिभा कहलाती है जिसके ऊपर मानव परमपरागतों से अनुसन्धान करता रहा है और नाना प्रकार की उड़ानें उड़ता रहा है। कोई साधक अपनी आत्मा के ऊपर उड़ाने उड़ता रहा है और वह साधना में परणित होने वाला साधक मुनिवरो! देखो अपनी परमपिता परमात्मा की आराधना करता है और वह कहता है तेजोमयी तेजाम् भूतम् ब्राह्मण व्रतम् तेजो मानो वह कहता है कि मैं तेजोमयी बनूँ। जैसे परमपिता परमात्मा तेज़वान है वह अग्निमयी स्वरूप कहलाता है इसी प्रकार प्रत्येक मानव की यह आकांक्षा होती है क्या मैं तेजोमयी बनूँ। जैसे अग्नि देवताओं का मुख कहलाता है इसी प्रकार जब परमपिता परमात्मा ने इस मानवीय शरीर का निर्माण किया तो मानव शरीर में भी नौ द्वारों का उन्होंने गठन किया और नौ द्वारों में नौ देवता विद्यमान रहते हैं। मेरे प्यारे! उस नौ द्वारों वाले इस मानवीय शरीर में एक चेतना विद्यमान होती है जिस चेतना का नामोकरण हम आत्मा के रूप में वर्णित करते रहे हैं। वह आत्मा कहलाता है जो मानो

नौ द्वारों के शरीर में प्रायः विद्यमान होता है। नौ द्वारों में मुनिवरो! देखो एक उपस्थ और ग्रीवा, दो नेत्रों के छिद्र हैं, दो नासिका के हैं, दो श्रोत्रों के हैं और एक मुखारबिन्दु कहलाया जाता है। यह नौ द्वार कहलाते हैं इसके द्वारम् ब्रह्म देखो इसी में आत्मा विद्यमान है। आत्मा के हमारे यहाँ दो प्रकार के लक्षणों का वर्णन किया गया है।

आत्मा का लोक-लोकान्तरों में प्रवेश

बेटा! मुझे वह काल आज स्मरण आ रहा है जिस काल में महर्षि जालवी ऋषि के यहाँ एक ब्रह्मवेत्ताओं की सभा हुई और ब्रह्मवेत्ताओं की सभा में यमाचार्य और पिप्पलाद ऋषि भी विद्यमान थे। तो यमराज से यह प्रश्न किया गया, यमाचार्य से यह प्रश्न किया गया कि आत्माम् भूतम् ब्रह्मा क्या यह आत्मा शरीर को त्याग करके कहाँ जाता है? जैसे मुनिवरो! यमाचार्य से नाचिकेता ने भी यह प्रश्न किया और उन्होंने मुनिवरो! अपने में विचार विनिमय करने वालो ने अपनी विचारधारा प्रगट करते हुए कहा सम्भवम् ब्रह्मणा लोकाम् यह आत्मा अपने में आत्म तत्त्व कहलाता है जिसके ऊपर मानव अपने में अन्वेषण करता रहा है। तो महात्मा जालवी ऋषि ने यह कहा क्या यह जो मानव का शरीर है यह तो पंच महाभौतिक कहलाया जाता है यह आत्मा का लोक माना गया है, लोक कहते हैं जिसमें वह वास करता है। तो इसी प्रकार उन्होंने जब यह प्रश्न किया कि महाराज आत्माम् भूतम् ब्रह्मे वेदाम् ब्रीही वेद मन्त्र यह कहता है कि आत्मा को जानने का कैसे प्रयास करें। जब यह आत्मा इस शरीर को त्यागता है तो यह कौन से लोक लोकान्तरों में जाता है? तो मानो उन्होंने कहा कि इन पंच मानो नौ द्वारों में इसमें मानो ब्रह्मणे पंच तन्मत्रा कहलाती हैं, काल और दिशा कहलाती हैं आत्मा और मन यह नौ पदार्थ माने गये हैं और नौ ही मानो नौ द्वार हैं और नौ द्वारों पर नौ ऋषि विद्यमान रहते हैं परन्तु देखो जिस द्वार से जो आत्मा जाता है उसकी वही गतियाँ क्योंकि उनमें किसी में जल प्रधान है, तो किसी में गुरुत्व प्रधान है, किसी में तेजोमयी अग्नि प्रधान है जैसे नेत्रों में अग्नि प्रधान मानी गई है और श्रोत्रों में वायु की प्रधानता और

नासिका में गुरुत्व की प्रधानता मानी गई है परन्तु इसी प्रकार मुखारबिन्दु में वायु व्रेतकेतु कहलाया जाता है। तो मेरे पुत्रो! देखो जब इसमें किसी में अग्नि किसी में देवम् ब्रह्मा अन्नाद की प्रतिभा का जन्म होता रहता है। तो मानो देखो **जिस भी द्वार से आत्मा जाता है उसी लोक में और उसी शरीरों को यह प्राप्त होता रहता है।** मेरे प्यारे! देखो मानो जब यह आत्मा इन मानव के नेत्र से आत्मा जाता है तो यह पक्षी की योनियों को प्राप्त होता रहा है। मेरे प्यारे! देखो जब यह अमृतम् मानो देखो जब यह रसना के द्वार से जाता है मुखारबिन्दु से तो यह चन्द्र देवता को प्राप्त हो जाता है। इसी प्रकार बेटा! जालवी ऋषि ने अपना मन्तव्य देते हुए कहा क्या यह आत्मा जब उपस्थ से जाता है तो यह क्रीड़ा करने वाला योनियों को प्राप्त होता है और जब इसमें मुनिवरो! क्रोध की मात्रा विशेषता में आत्मा को त्यागा जाता है तो विषधर जितने भी विषैले प्राणी हैं उनमें प्राप्त हो जाता है। तो यह आत्मा अपने में मानों बड़ी विचित्र अमृतियों को प्रकृति के अवयवों को जानता हुआ— ऋषि कहता है क्या इसी के ऊपर हमें अन्वेषण करना है, विचार विनिमय करना है।

आत्मा का लोक

मेरे प्यारे! देखो आत्माम् भूतम् ब्रह्मा जालवी से कहा कि आत्मा का लोक क्या है? उन्होंने कहा कि आत्मा का लोक पंचमहाभूत है। इस पंचमहाभूतों के शरीर में रहनी वाली एक चेतना है उसी को आत्मा कहते हैं। चेतना जो गति है वही तो मानों इस शरीर को गतिवान बनाती रहती है और जब यह मानों गति नहीं रहती तो मानव का शरीर पूर्णता को प्राप्त हो जाता है। परन्तु देखो यह तो स्थिर क्रियाकलाप रहा और वास्तव में मृत्यु अपने में देखो रूलाने वाली है। यमराज भी कहते हैं कि मृत्यु को विजय करने वाला ही मानों देखो यमराज कहलाता है। जैसे बेटा! देखो आत्माम् भूतम् नाचिकेता ने कहा क्या हे प्रभु यह आत्मा शरीर को त्याग करके कहा जाता है? तो इस सम्बन्ध में जालवी ऋषि से प्रश्न किया गया जालवी ऋषि ने मुनिवरो! अपना

मन्तव्य देते हुए कहा सम्भूति ब्रह्मणा लोकाम् सम्भूति लोकाम् वाचस्सुतम। मेरे प्यारे! देखो सम्भूति का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि आत्माम् भूतम् आत्माम् लोकाः मेरे प्यारे! देखो यह आत्मा अपने में, अपने में चेतना है आत्मा के चले जाने से मानव का शव मानो शून्यता को प्राप्त हो जाता है।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज और राजा जनक, रम्भेश्वरी सम्वाद

यह मुनिवरो! देखो वेद का मन्त्र कहता है यजन्म ब्रह्मे जैसा बेटा! देखो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! राजा जनक के विद्यालय में विद्यमान हो करके और यज्ञशाला में बेटा! देखो याग का जब व्यवधान हो रहा था तो मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से उन्होंने देखो उनकी पत्नी रम्मेश्वरी ने कहा था हे प्रभु! हे ऋषिवर! हम यह जानना चाहते हैं कि आत्मा भूतवान् भूवम् ब्रह्मे हे प्रभु यह प्रकाश का मूलक क्या है? तो उस समय उन्होंने कहा कि प्रकाश का जो मूलक है मानों यह सूर्य माना जाता है। सूर्य का प्रकाश आता है मानव प्रकाशित हो जाता है और प्रकाश में रत्त होता हुआ अपने में प्रकाश को प्राप्त हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो यही प्रकाश का द्युतक है। सूर्य प्रातःकाल उदय होता है माता अपने पुत्रो का जागरुक कर लेती है, विद्यालय में ब्रह्मचारियों को आचार्य जागरुक कर लेता है और कहता है आओ देखो, जागरुक हो जाओ सूर्य प्रकाशक बन करके आ गया है। यह ऊषा नाम की कान्ति, नाम की किरणों को ले करके आ गया है तुम उदय हो जाओ, अपने क्रियाकलाप में रत हो जाओ। मेरे प्यारे! देखो वह प्रत्येक मानव याज्ञायाम् ब्रह्मणे वह जागरुक हो जाते हैं।

चन्द्रमा का प्रकाश

मेरे प्यारे! देखो वह राजा जनक ने कहा प्रभु कहीं ऐसा हो कि सूर्य का भी अभाव हो जाए तो वह किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंने कहा जब सूर्य का अभाव हो जाए तो हमारे नेत्र मानो चन्द्रमा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं और वह प्रकाश मुनिवरो! देखो

चन्द्रमा का मधुर प्रकाश है। आनन्दम् ब्रह्मे वह समुद्रों से उसका समन्वय रहता है और वही माता के गर्भस्थल में रहने वाला जरायुज है अथवा गर्भाश्य में रहने वाला शिशु है वह अमृत देने वाला देखो वह चन्द्रमा अमृत देता है। माता के निचले विभाग में, रसना के निचरले विभाग में एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है जब मानों देखो चन्द्रमा का अव्रेत होता है, प्रकाश आता है तो वह नाड़ी देखो उसमें से अमृत को ग्रहण करने लगती है। वह अमृत बेटा! देखो वह रसना से वह माता के पुरातत नाम की नाड़ी में जाता है और पुरातत नाम की नाड़ी से समन्वय होता हुआ माता की लोरियों से पंचम नाड़ियों का जन्म होता है और नाड़ियों में अमृत जाता हुआ बेटा! माता की नाभि और शिशु की नाभि का एक समन्वय होता है तो वह अमृत का पान करता रहता है, वह अमृतमयी कहलाता है। यह चन्द्रमा हमारे प्रकाश का द्युतक है और चन्द्रमा हमारा देवत्व कहा जाता है इसका समन्वय बेटा! समुद्रों से होता है और समुद्रों से देखो वह अमृत को ग्रहण करता हुआ मुनिवरों। कृषक की भूमि ब्रहे नाना प्रकार की यह वसुन्धरा है जो पृथ्वी इसके गर्भ में नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थों का जन्म हो जाता है जिससे यह संसार गतिवान मानो देखो अपने में भरण करने लगता है। तो विचार आता है बेटा! चन्द्रमा अपने में पवित्र है, चन्द्रमा अमृत के देने वाला है, वह अमृतमयी कहलाता है। इतने में बेटा! देखो ऋषि ने कहा सम्भवम् ब्रह्मे देखो चन्द्रमा की उपास्य तो उपास्य देव बन जाओ उसके।

तारा मण्डलों का प्रकाश

राजा जनक उनकी पत्नी ने नतमस्तिष्क हो करके कहा कि हे प्रभु! यदि चन्द्रमा का भी अभाव हो जाए, यह चन्द्रमा भी न हो तो किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? तब उन्होंने कहा कि जब यह चन्द्रमा नहीं होता तो धीमा-धीमा तारामण्डलों का प्रकाश है अन्धकार छाया हुआ है चन्द्रमा सूर्य नहीं है तो मानो उस समय वह जो धीमा-धीमा प्रकाश आ रहा है तारामण्डलों का उसके प्रकाश में हम रत्त

हो जाते हैं और अपनी पगडण्डी को ग्रहण कर लेते हैं। वही पगडण्डी के पथप्रदर्शक बन जाते हैं। यह लोक लोकान्तर, यह ब्रह्माण्ड बड़ा विचित्र है। नाना प्रकार का यह जो मण्डल है तारा मण्डल एक दूसरे में समाहित हो रहा है एक दूसरे का एक दूसरा मनका बना हुआ है और वह चेतना के सूत्र में पिरोया हुआ है।

प्रभु का अनन्तमयी राष्ट्र

मेरे प्यारे! जब हम देखो विज्ञान के वांगमय में प्रवेश करने लगते हैं, अनुसन्धान करते हैं तो मुनिवरों! देखो एक दूसरा एक दूसरे में ओत-प्रोत होता हुआ प्रायः हमें दृष्टिपात आता है। जैसे मेरे प्यारे! यह पृथ्वीयाँ—नाना पृथ्वीयों को वैज्ञानिकों ने जाना है। मुझे स्मरण आता रहता है भारद्वाज मुनि के यहाँ बेटा! देखो एक वैज्ञानिकों की सभा हुई। उस सभा में यह निर्णय होने लगा कि यह सूर्य के अन्तर्गत पृथ्वीयाँ कितनी भ्रमण करती हैं। तो उन्होंने बेटा! तीस लाख पृथ्वीयों का व्यवधान किया। उन्होंने कहा तीस लाख पृथ्वीयाँ हैं जो सूर्य के अन्तर्गत सूर्य में समाहित होती हैं। सूर्य इतना विशाल मण्डल है जिसमें मानो देखो तीस लाख पृथ्वीयाँ ओत-प्रोत हो जाती हैं। मेरे प्यारे! देखो यह नाना ब्रहे और नाना सूर्य एक सूर्य नहीं अनन्य सूर्य कहलाते हैं। मेरे प्यारे! देखो एक सहस्र सूर्य बृहस्पति में समाहित हो जाते हैं और एक सहस्र ब्रहस्पति आरूणी मण्डल में समाहित हो जाते हैं और एक सहस्र आरूणी मण्डल मेरे प्यारे! ध्रुव में समाहित हो जाते हैं। एक सहस्र ध्रुव पुष्प नक्षत्र में समाहित हो जाते हैं, एक सहस्र पुष्प नक्षत्र स्वाति नक्षत्र में ओत-प्रोत हो जाते हैं। एक सहस्र स्वाति नक्षत्र मूल नक्षत्र में ओत-प्रोत हो जाते हैं और एक मानो देखो मूलम ब्रह्मा एक सहस्र मूल नक्षत्र अचंग लोक में, मण्डल में ओत-प्रोत हो जाते हैं। एक सहस्र अचंग मण्डल समवृत्ति लोको में प्राप्त हो जाते हैं। एक सहस्र समवृत्ति मण्डल मेरे प्यारे! देखो, व्रेतकेतु मण्डल में ओत-प्रोत हो जाते हैं। एक सहस्र व्रेतकेतु मण्डल मुनिवरो! देखो अमृत प्रव्हाः ध्रुव अमृते वाचन्नमम् गन्धर्वाम् भवे वह गन्धर्व में ओत-प्रोत हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो इन

सब मनको का एक अन्तिम जो एक सूत्र है, अन्तिम जो मानो मनका है वह गन्धर्व कहलाता है। तो इतने मानो मण्डलों का एक सौर मण्डल बनता है और सौर मण्डल बेटा! अपनी एक ईकाई में रमण कर रहा है। मानो देखो वह एक प्रकार की माला बनी हुई है जिस माला को योगीजन अपने में धारण करते हैं। जिस माला को मेरे पुत्रो! देखो वह वैज्ञानिक अपने में धारण करते रहे हैं और वह विज्ञान मानो देखो कहीं आध्यात्मिकवाद में कहीं भौतिकवाद में रमण कर रहा है। तो विचारवेताओं ने कहा कि इतने सौर मण्डलों का मेरे प्यारे! अमृत कहलाता है यह मण्डल है, यह सौर मण्डल कहलाता है। तो एक अरब छयानवे करोड़ उन्नतीस लाख उन्नचस्वी हजार पांच सौ इक्कसठ के लगभग बेटा! देखो इतने सौर मण्डलों की एक आकाश गंगा बनती है, एक आकाश गंगा कहलाती है। मुनिवरो! देखो लगभग एक अरब अठानवे करोड़ उन्नासी लाख उन्नचसवी हजार पाँच सौ बावन देखो एक सौ वृत्ति अमृतम् देवत्वाम् कहलाने वाला मेरे प्यारे! इतनी गणना में आने वाली आकाश गंगा—आकाश गंगा कहलाती हैं। मेरे प्यारे! पौने दो अरब आकाशगंगाओं की लगभग मुनिवरो! देखो एक अवन्तिका बनती है। पौने दो अरब अवन्तिकाओं की एक निहारिका बनती है। तो विचार आता है बेटा! प्रभु का यह राष्ट्र जगत बड़ा अनन्तमयी है। ऋषि मुनियों ने इतनी आकाशगंगा और निहारिकाओं को जान करके वह अपने में मौन हो गये हैं। तो विचारवेत्ताओं ने कहा मुनिवरों! जब उनका धीमा-धीमा प्रकाश आ रहा है उसी में मानव अपनी पगडण्डी को ग्रहण कर लेता है। वह प्रकाश में रत्त हो जाता है और वह मानों देखो उसी धीमे प्रकाश से अपने में अपनेपन को दृष्टिपात करता रहता है।

अग्नि का प्रकाश

मेरे पुत्रो! देखो उन्होंने कहा सम्भव ब्रह्मे राजा ने कहा हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं जब तारा मण्डलों का भी अभाव हो जाता है तो किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंने कहा जब तारामण्डलों का अभाव हो जाता है तो हम अग्नि के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं।

अन्धकार छाया हुआ है मेरी प्यारी माता अपने गृह को प्रकाश में अग्नि से प्रकाश में ला देती है, वह प्रकाश हो जाता है। तो अग्नि के प्रकाश में अपने क्रियाकलापों में रत्त हो जाता है। यही अग्नि बेटा! देखो वेद के वांगमय में चार प्रकार की अग्नि का चयन किया है। सबसे प्रथम गार्हपत्य नाम की है जिसमें ब्रह्मचारी तपता है। गर्हपत्य नाम की अग्नि में ब्रह्म अमृतम् देखो गृह तपता है पति पत्नी तपते रहते हैं और वैश्वानर नाम की अग्नि में वानप्रस्थ तपता रहता है और आवहनीय नाम की अग्नि में बेटा! देखो सन्यस्थ तपता रहता है। यह तपायमान होने वाला जगत है यह अग्नियों में तपायमान है। यही अग्नि बेटा! देखो जब आचार्यों के आयुर्वेदा आचार्यों के समीप पहुँची तो बेटा! उन्होंने पच्चासी प्रकार की अग्नियों का चयन किया है और मुनिवरों! यही अग्नि जब वैज्ञानिकों के कुल में पहुँची तो वैज्ञानिकों ने बेटा! अरबों खरबों प्रकार की अग्नि का चयन किया है। बेटा! देखो अग्नि अपने में अग्न्याधान करती रहती है।

विचारवेत्ता कहते हैं कि अग्नम् ब्रह्मा अग्नम् देवत्वाम् लोकाम् यह अग्नि ही मेरे प्यारे! हमारा वृत का कहलाया जाता है। तो विचार आता है कि अग्नि के ऊपर विचारवेत्ताओं ने बेटा! इस अग्नि की धाराओं के ऊपर शब्द जाता है वह द्यो लोक में प्रवेश कर जाता है। नाना प्रकार का जो परमाणुवाद है वह अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके अपने में लय हो जाता है। यह अग्नि देवाम् मुखाम् ब्रह्मा यह देवताओं का मुख माना गया है जो सब देवताओं को प्राप्त होता रहता है।

शब्द का प्रकाश

मेरे प्यारे! देखो जब इस प्रकार ऋषि ने वर्णन किया तो पति पत्नीम् ब्रह्मे राजा और उनकी पत्नी ने कहा प्रभु हम यह जानना और चाहते हैं प्रभु! यदि अग्नि का अभाव हो जाए तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंने कहा कि यदि अग्नि का अभाव हो जाए, अग्नि न रहे तो हम शब्द के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। यही शब्द है जो मानों देखो ध्वनि कर रहा है और मानव अपने में ध्वनित हो रहा है।

इस ध्वनि को जानने वाला मानो बेटा! देखो अन्धकार रात्रि काल में विचारवेत्ता मुनिवरो! देखो परमाणुओं का जो संघर्ष होता है शान्त मुद्रा में बेटा! देखो उसका ध्यानावस्थित हो जाते हैं और वही ध्यानावस्थित हो करके मुनिवरों! देखो अमृतम् वह शब्द की ध्वनि को पान करते हैं। जब और साधक मुनिवरों! देखो अन्तिम में जाता है तो एक अनहद ध्वनि होती है जो मुनिवरों! देखो अनहद ध्वनि के द्वारा जो ध्वनिम ब्रह्मा ध्वनित होता रहता है वह ध्वनियों को श्रवण करता है वह साधक मुनिवरों। देखो अपनी ध्वनियों में ध्वनित होता हुआ परमाणुवाद में प्रवेश कर जाता है। विचारवेत्ता कहते हैं बेटा! अग्नम् ब्रह्मा अग्नम् देवत्वम् ब्रह्मा अग्नाम् भूतम् वाचन्नमम् ब्रह्मे अग्ने—मेरे प्यारे! देखो वह वही तो देखो ध्वनि है जो परमाणुवाद में रत्त हो रही है शब्दों की ध्वनियों में हो रही है। यदि शब्द पवित्र है तो ध्वनि मुनिवरों! देखो वह अमृत देखो प्रदूषण को समाप्त करती है और यदि वाणी में दूषितपना है, शब्दों में दूषितपना है ध्वनि पवित्र नहीं है तो वही मानो प्रदूषण को जन्म देने वाली है।

विचार आता रहता है इसलिए वेद के ऋषियों ने कहा हे मानव तू सत्यवादी बन और अपनी वाणी से अपनी ध्वनि में मानो परमात्मा की ध्वनि को सम्बोधित कर। मेरे प्यारे! इस प्रकार जब ऋषि ने वर्णन किया और उस समय वर्णन करते उन्होंने कहा यही ध्वनि है एक मानव अंधकार में चला गया तो मार्ग से कुपथ को चला जाता है कुमार्ग में चला गया, अन्धकार में चला गया और वह भयँकर वन में जा करके कोई मार्ग प्राप्त नहीं हो रहा है। वह कहता है अरे है कोई मार्ग चेताने वाला जो मानव मार्ग में इस तरह से कहता है आ जाओ, मैं मार्ग में स्थिर हूँ। बेटा! उसी शब्द की ध्वनि से वह ध्वनित होता उस मार्ग को प्राप्त कर लेता है जिससे उसका विच्छेद हो गया है। तो उसी मार्ग को प्राप्त करता मार्ग का पथ प्रदर्शक बन जाता है।

मेरे पुत्रो! देखो ऋषि ने कहा याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि वह अमृतम् ब्रह्मा मानो देखो वही तो अमृत है और वही ध्वनि से मानो

देखो पाण्डित्व बनता है। जब पाण्डित्व अपनी वाणी से वेद का बखान करता है वेद ध्वनि को ध्वनित बना लेता है तो मानो वह पाण्डित्व कहलाता है। सत्यवादी बन करके पाण्डिय अपनी पाण्डित्व की आभा में प्रायः परणित हो जाता है। तो विचारवेत्ताओं ने कहा है क्या तुम अपनी वाणी को मानो ध्वनि को जानने का प्रयास करो। वह ध्वनि देखो कहीं तारामण्डलों से है, कहीं परमाणु एक दूसरे में संघर्ष कर रहा है मानो कहीं लोक लोकान्तरों में संघर्ष होता रहता है वह सब ध्वनि कहलाती है।

मेरे प्यारे! देखो ध्वनि के ऊपर विचार-विनिमय किया जाए तो वेद का शब्द कहता है शब्दम् ब्रह्मा शब्दम् ब्रह्मे क्रतम् यह शब्द ही मानो देखो ब्रह्म की वेदी कहा जाता है। ब्रह्म की वेदी पर विद्यमान होने वाला ही मुनिवरो! देखो शब्द को जानता है। यह शब्द जब अग्नि नहीं होती तो शब्द के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं और यही प्रकाश मानो देखो मानव के जीवन का द्युतक कहा जाता है।

आत्मा का प्रकाश

मेरे पुत्रो! देखो जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया अपनी आभाएँ प्रगट कीं तो उस समय राजा और उनकी पत्नी राम्भेश्वरी ने कहा प्रभु हम यह जानना चाहते हैं जब मानो यह शब्द भी नहीं होता तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंने कहा जब ये ध्वनि नहीं होती, जब मानो शब्द नहीं होता तो जटा पाठ में वेद का बखान करता है कहीं धन पाठ में करता है कहीं माला पाठ का उद्गीत गा रहा है और कहीं मानों देखो दीक्षित बन रहा है शब्द के कारण। इसी प्रकार मानों देखो जब शब्द नहीं होता तो हे भगवन् देखो हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। यह आत्मा हमारे प्रकाश का द्युतक है। यह आत्मा को जानने का प्रयास करो। प्रत्येक मानव परम्परागतों से साधक बना हुआ है। आचार्यों के समीप जाता रहा है और आचार्यों से जिज्ञासु यही कहता है प्रभु मैं आत्मा को जानना चाहता हूँ। मुझे आत्मा के जानने का मार्ग मुझे दीजिए तो उस समय आचार्य उसे दीक्षित

बनाता है। तो मानों देखो इस प्रकार अमृतम् ब्रह्मा आत्माम् भूतम् बेटा! देखो आत्मा एक चेतना है जो इस शरीर में विद्यमान रहती है।

मेरे प्यारे! देखो जब तक आत्मा इस शरीर में विद्यमान है तब तक यह मानव चेतनित बना रहता है और जब आत्मा निकल जाता है तो चेतना से शून्य हो जाता है। मानो देखो यह शरीर पंच महाभूतों का वृत कहलाया गया है। इस पंच महाभौतिक पिण्ड को अग्नि में दाह कर देते हैं अग्नि का भाग अग्नि में प्रवेश कर जाता है, आपो का भाग जल में प्रवेश कर जाता है, गुरुत्व गुरुत्व में प्रवेश कर गया है और वायु मुनिवरों! वायु में प्रवेश कर जाती है और मुनिवरों! अन्तरिक्ष अन्तरिक्ष में चला जाता है। विचार आता है बेटा! प्राण अपनी आभा में चित्त के मण्डल को ले करके गमन करता रहता है। तो विचार आता रहता है बेटा! मानव का शरीर जब तक चेतनित बना रहता है जब तक आत्मा विद्यमान है। आचार्यों ने इसीलिए नाना प्रकार के वेद का अध्ययन किया है मन्त्रों के वांगमय में पहुँच गये हैं। उनका एक ही मन्तव्य रहा है कि हम आत्मा को जानने को प्रयास करें जिस आत्मा के कारण हम चेतना में चेतनित रहे हैं और इसके न रहने से शून्यता को प्राप्त होते रहते हैं। उसको समाज कोई मृत्यु कहता है, कोई शरीरान्त कहता है, कोई शरीर को मानो कहता है कोई शरीर को त्याग दिया है, कोई किसी प्रकार से सम्बोधित करता रहता है परन्तु मन्तव्य केवल यह कि वह चेतना से रहित हो गया है। वह शून्यता को प्राप्त हो गया है और वह शून्यता को प्राप्त होना ही मुनिवरों! देखो ब्रह्मणे ब्रहाः वही आत्मा का न रहना तो आत्मा को जानो जो इस शरीर में पंच महाभूतों वाले लोक में रमण करता है। यह पंचमहाभूतों के लोक में रहने वाला ही तो आत्मा कहलाता है इस आत्मा के ऊपर मानव परम्परागतों से अनुसन्धान करता रहा है।

आत्मा को जानने की प्रेरणा

जितना भी मानव मोह कर रहा है, वह आत्मा को तृप्त करने के लिए जितना मानव त्याग कर रहा है वह गृह को त्याग देता है, तपस्या करता है अपने में तपस्वी बना हुआ है। मेरे प्यारे! वह आत्मा को जानने

के लिए एक मानव बेटा! साधक बन करके अपने अन्तरात्मा को न जान करके मुनिवरो! देखो जगत् में भ्रमण करता है उसका मन्तव्य भी केवल यही रहता है कि मैं आत्मा को जानूँ। तो मेरे प्यारे! देखो एक मानव प्राणायाम कर रहा है वह आत्मा को जानने के लिए। एक मानव बेटा! मृत्युञ्जय बन रहा है कि मैं मृत्यु से पार होना चाहता हूँ इन्द्रियों के रूगणों में मैं रमण करना नहीं चाहता। केवल उसका मन्तव्य भी यही है कि मैं आत्मा को जानने का प्रयास करूँ। परन्तु विचार आता है कि आत्मा एक चेतना है, आत्मा मानों देखो ज्ञान युक्त है, आत्मा इस शरीर में वास करने वाला है। आत्मा नहीं रहेगा तो चेतना नहीं रहेगी और चेतना नहीं रहेगी तो संसार का कोई भी क्रियाकलाप नहीं कर सकता। तो इसलिए चेतना के ऊपर हमारा एक नृत होना चाहिए अथवा उसके ऊपर अनुसन्धान होना चाहिए।

मेरे प्यारे! देखो आत्मा के निकल जाने के पश्चात् मानव को नाना प्रकार की संज्ञाओं से सम्बोधित किया जाता है परन्तु देखो यह मृत्यम् ब्रह्मा मृत्यु अपने में कोई मृत्यु नहीं कहलाती है। यह दोनों का मुनिवरो! अपने अपने में रूपान्तर हो जाना है जैसा मुनिवरों! देखो महर्षि पिप्पलाद ने अपनी देवी से कहा था क्या हे देवी जब आत्मा निकल जाता है तो मानों देखो अग्नि अग्नि में, अन्तरिक्ष अन्तिरिक्ष में और देखो यह आपो आपो में, गुरुत्व गुरुत्व में, पृथ्वी का भाग पृथ्वी में प्रवेश हो जाता है और यह आत्मा अपने संस्कारों के मानों समूह को ले करके मन बुद्धि दोनों सम्मिलित हो करके आत्मा इस शरीर से निकल जाता है। मानों जन्माम् भूतम् ब्रह्मा संस्कार रहते हैं अन्तःकरण में तो पुनः संस्कारों के आधार पर किसी माता के गर्भ में यह प्रवेश कर जाता है। तो विचार आता रहता है परन्तु देखो मोक्षाम्भूतम् ब्रह्मे आचार्यों ने कहा इसको हमें मोक्ष में पहुँचाना है हमें इसको जान करके ही मोक्ष को प्राप्त करना है। मोक्षणाम्भूतम् ब्रह्मे मोक्ष कहते हैं जो संस्कारों से विहिन हो जाता है। **संस्कारों से विहिन हो जाने का नाम ही मोक्ष है।** मेरे प्यारे! देखो इस संसार की प्रतिभा में न रहना

ही आनन्द और देखो वह परमात्मा के आनन्द में अपने को परमात्मा में रमण कर देता है।

विचार आता रहता है आचार्यों ने कहा है पिप्पलाद ने भी यही कहा क्या मृत्यु की मृत्यु ब्रह्म है मृत्यु को जानने वाले की मृत्यु नहीं हुआ करती है क्योंकि वह आत्मा का ही आत्मा का आत्मा समाप्त होता है। **आत्मा संस्कारों का समूह है यह केवल शरीर का रूपान्तर होता रहता है** और रूपान्तर वह यह जो अन्तम् ब्रह्मा वच्ततप प्रव्हे जो अन्त में विचार होते हैं उसी विचारों के आधार पर किसी माता के गर्भ में जाने का उसे अवसर प्राप्त हो जाता है। उसी को प्राप्त हो जाता है जो अन्त में संस्कार शरीर को त्यागते समय जो संस्कार बने रहेंगे उसी के आधार पर जन्म लेता रहता है।

अनन्त गम्भीर रहस्य

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करना नहीं चाहता हूँ विचार विनिमय यह कि हमारे इस शरीर का यह नौ द्वारों वाला यह शरीर है एक मानो भव्य भवन है जिसमें आत्मा विद्यमान रहता है और यह आत्मा नौ द्वारों से जाता है। मुनिवरों! देखो जो किसी द्वार से जाने से यह पक्षियों की योनियों को प्राप्त होता है और यह किसी द्वारा से जाने से मानों विषैले प्राणियों को सर्प इत्यादियों को प्राप्त होता रहता है और कोई मानों देखो वह सिंह इत्यादि को प्राप्त होता रहता है। कोई और जब नासिका से जाता है सूर्य स्वर से जाता है तो यह मानव की योनि को प्राप्त होता है। चन्द्र स्वर से जाता है तो मानों यह मानव तो बनता है परन्तु विलासी बन जाता है। इसी प्रकार अमृतम् ब्रह्मा लोकाम् जो मुखारबिन्दु से जाता है वह देखो विरानकेतु पक्षियों में प्रवेश करता है जो हिंसक प्राणी हैं उनमें भी अवान्तर भेद माने गये हैं। तो बेटा! देखो मुखारबिन्दु में ब्रहे दो प्रकार की प्रकृति होती है यह एक श्वास की गति ब्राहा होती है एक मानों देखो अप्रहा होती है। जो अप्रहा से जाता है देवत्व को प्राप्त होता है और जो आत्मा ब्रह्मरन्ध्र से जाता है, नौ द्वारों से शरीर से जाता है तो बेटा! वह देव कोटि को प्राप्त होता

रहता है। तो विचार आता रहता है मुनिवरो! यह नौ द्वारा का यह एक मानव का शरीर है यह बड़ा विचित्र है इसके ऊपर मानव परम्परागतों से सृष्टि के प्रारम्भ से मानों अनुसन्धान करता चला आया है। ऋषि-मुनियों ने बहुत कुछ जाना इसके ऊपर परन्तु देखो यह उसके पश्चात् भी अनन्तता में एक मानों गम्भीर रहस्तम बना हुआ है।

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नहीं आया हूँ विचार विनिमय क्या जब मुनिवरो! देखो राजा जनक उनकी पत्नी ने याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से यह प्रश्न उत्तर लिए तो उनका अन्तरात्मा प्रसन्न हो गया। उन्होंने कहा धन्य है ऋषिवर आप ने हमें प्रकाश में पहुँचा दिया अन्धकार से प्रकाश में इसलिए आप को धन्य है। मेरे प्यारे! देखो ऋषि अमृतम् ब्रह्मा कोई प्राप्त होता अपने में मौन हो गया। आत्मा पर जा करके मौन राजा हो गया उनकी पत्नी भी मौन हो गई और ऋषि भी मौन हो करके और वह प्रभु के चिन्तन में मानो देखो सदैव रत्त हो गये। यह है बेटा! आज का वाक्।

आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्रायः यह क्या हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए पंचमहाभूतों वाले लोक को जानने का प्रयास करें और देवत्व को प्राप्त हो जाएँ। यह है बेटा! आज का वाक् अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा। आज का वाक् समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन।

ओ३म् देवाः आभ्याम् मनुगतम् वाचन्नमः।

ओ३म् तनु गायन्तवाः रथम् माऽम प्राची रेवाः आप्याम् मनाःयम सर्वाः।।

पूज्य महानन्द जी—अच्छा गुरुदेव।

दिनांक : 29 जून, 1992

स्थान : ताजपुर, बुलन्दशहर

।। ओ३म् ।।

दार्शनिक चर्चाएँ

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा अनन्तमयी माने गये हैं और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत् हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह परमपिता परमात्मा निहित हैं और वह सर्वत्रता में ओत-प्रोत रहते हैं। इसीलिए हमारा प्रत्येक वेद मन्त्रः उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है जिस प्रकार माता का पुत्रः माता की गाथा गा रहा है, जिस प्रकार यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है। इसी प्रकार प्रत्येक वेद मन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है अथवा परमात्मा के गुणों का वर्णन कर रहा है। गुणाधानम् ब्रह्मा वर्णस्सुतमः देवाः—**वेद का मन्त्र कहता है उसके गुणों को धारण करना ही मानो उसकी उपासना कही जाती है।** परमपिता परमात्मा संसार का रचियता है और एक-एक कण-कण में व्याप्त है। कोई परमाणु ऐसा नहीं है जहाँ वह परमपिता-परमात्मा जिसके अन्तः में विद्यमान न हो। समुद्रों की कोई गुफा ऐसी नहीं है, कोई भी तरंगें ऐसी नहीं है जहाँ वह परमपिता-परमात्मा न हो, कोई पर्वतों की गुफा ऐसी नहीं परन्तु वह मानव की अन्तर्गुफा में भी सदैव विद्यमान रहते हैं। प्रत्येक मानव परम्परागतों से उस परमपिता-परमात्मा के सम्बन्ध में नाना प्रकार की विचारधाराएँ प्रायः व्यक्त करता रहा है।

पृथ्वी, वसुन्धरा के स्वरूप

मुझे वह काल स्मरण आता रहता है जिस समय उद्दालक गोत्र के शिकामकेतु उद्दालक का यह कथन था—उन्होंने एक वेद मन्त्र अपने ब्रह्मचारियों के मध्य में जब उद्गीत रूप में गाते तो उन्होंने एक वेद मन्त्र उच्चारण किया अमृतम् ब्रह्मे कर्मणं ब्रव्हा कृति तो शिकामकेतु उद्दालक ने कहा हे ब्रह्मचारी कवन्धि, वहाँ विद्यमान थे। ब्रह्मचारी कवन्धि से कहा कि तुम बहुत, तुमने बहुत भ्रमण करते हुए मेरे आश्रम में तुम्हारा आगमन हुआ है परन्तु यह वेद का मन्त्र यह कहता है स्वर्णय ब्रह्मे पृथ्वी वर्णाः हमारे यहाँ पृथ्वी को वरणीय कहा जाता है यह वरणीय क्यों है जबकि परमपिता परमात्मा को वरणीय कहा जाता है? तो ब्रह्मचारी कवन्धि ने यह कहा कि वर्णनं ब्रह्मे व्रतम् पृथ्वीः यह जो पृथ्वी है इसीलिए वरणीय है क्योंकि यह वसुन्धरा है और इसके गर्भस्थल में नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ तपता रहता है और इसके गर्भ में नाना प्रकार का जलाश्य अपने में तपायमान रहता है। तो इसीलिए अपनी वरणीय है क्योंकि जो भी इसमें समाहित रहता है वह उसी में मानो देखो निहित हो करके उसको अपना वरणीय बनाता है। इसी प्रकार माता को भी वरणीय कहा गया है वर्णनं ब्रह्मा देवत्वाम् प्रथम ब्रव्हे क्योंकि यह पृथ्वी ही मातृत्व की आभा में निहित रहती है। हमारे यहाँ पृथ्वी को ममतामयी के रूप में वरणित किया गया है। जब मुनिवरो! देखो यह संसार का पिण्ड का निर्माण होता है तो पिण्ड में एक पृथ्वी अपने में अद्वितीय कहलाती है परन्तु उस पिण्ड में सर्वत्र ब्रह्माण्ड की प्रतिभा का प्रायः दर्शन होता रहता है।

मेरे प्यारे! जब ब्रह्मचारी कवन्धि ने यह कहा—क्या वाक् तो तुम्हारा ब्रह्मचारी यथार्थ है परन्तु मैं एक वाक् और जानना चाहता हूँ यह वसुन्धरा इसे क्यों कहा गया है? तो ब्रह्मचारी कवन्धि ने कहा हे प्रभु इसको इसीलिए वसुन्धरा कहा गया है—वसुन्धरा कहते हैं क्योंकि इस में हम वशीभूत रहते हैं, इसी के गर्भ में निहित रहते हैं तो इसीलिए इसको वसुन्धरा कहा जाता है। वसुन्धरा का अभिप्रायः है वसुन्धरम्

ब्रह्मा वर्णस्सुतम् मानो जो जिसमें बसता है उसी को वसुन्धरा के रूप में वरणित किया जाता है तो इसीलिए पृथ्वी को वसुन्धरा कहते हैं। क्योंकि इसमें हम सब बसते हैं और यह नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ देती रहती है। जब वैज्ञानिकजन इसके गर्भ में प्रवेश करते हैं इसके गर्भ में मानो परणित हो जाते हैं तो यह नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थों को जानने वाले वैज्ञानिक नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करते हैं। ब्रह्मचारी कवन्धि ने कहा हे प्रभु एक समय मैं और मेरे पूज्यपाद गुरुदेव महर्षि तत्त्व मुनि महाराज के द्वारा पहुँचे। तत्व मुनि महाराज ने हमारा बड़ा आश्रव तम अहे मानो स्वागत किया। तो प्रभु उस समय देखो ब्रह्मणे व्रतम् तत्व मुनि महाराज से आचार्य ने एक प्रश्न किया क्या यह वसुन्धरा क्या है? तो उन्होंने कहा कि यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड ही वसुन्धरा के रूप में वरणित रहता है मानो जो जिसमें वशीभूत रहता है। एक मण्डलों की माला बनी हुई है और एक दूसरी माला माला को प्रभावित कर रही है जिस प्रकार प्राणी-प्राणी में एक दुसरे में कटिबद्ध हो रहा है जैसे माता का पुत्र माता में कटिबद्ध है और वसुन्धरा में मानो यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड अपने में वशीभूत रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो यह ब्रह्मचारी कवन्धि ने जब ऐसा कहा तो ऋषि बड़े प्रसन्न हुए उन्होंने कहा कि तुम यथार्थ हो क्योंकि अपना मन्तव्य नहीं केवल ऋषि मुनियों का जो मन्तव्य है, विचार-विनिमय है उसका तुम अपने में गुणगान गाते रहते हो इसलिए तुम्हारा अध्ययन पवित्रत्व कहलाता है।

मेरे पुत्रो! देखो इसी प्रकार वसुन्धरा के सम्बन्ध में हमारे यहाँ नाना प्रकार का प्रसंग आता रहता है परन्तु वसुन्धरा का अभिप्रायः यह कि जिसके गर्भ में हम सब वशीभूत रहते हैं इसीलिए परमपिता-परमात्मा को वसुन्धरा कहा जाता है। क्योंकि वसुन्धरा के गर्भ में ही इस परमात्मा के गर्भस्थल में बेटा! सर्वत्र ब्रह्माण्ड निहित रहता है, नाना प्रकार के लोक लोकान्तर इसी में परणित हो जाते हैं।

परमपिता परमात्मा विभु है

विचारवेत्ता यह कहते हैं कि अमृतम् ब्रह्मा वेदाम् भूतप प्रव्हा

परमात्मा को वेद मन्त्रों में बेटा! विभु के रूप से वर्णन किया गया है। क्योंकि हमारे यहाँ दो प्रकार के विश्वस्त माने जाते हैं एक अणु है एक विभु है—तो अणु का मानो देखो विभाजन हो जाता है परन्तु देखो विभु का विभाजन नहीं होता। विभु तो एक-एक कण-कण में व्याप्त रहता है। तो इसीलिए परमपिता परमात्मा को विभु के रूप में वरणित किया गया है विभामभूतं ब्रह्मा विभम ब्रव्हे तो वेद का ऋषि कहता है कि वह तो मानो देखो विभु के रूप में वरणित रहता है। परमाणु का—जब मुनिवरो! देखो मुझे स्मरण आता रहता है महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ एक समय देखो कुछ ब्रह्मचारीजन कुछ विज्ञानवेत्ताओं के समीप पहुँचे उन विज्ञानवेत्ताओं में बेटा! देखो महर्षि प्रवाहण और शिलक, दालभ्य तीनों क्योंकि ब्रह्मवेत्ता भी थे और ब्रह्मवेत्ता होने से विज्ञानवेत्ता भी थे। दोनों प्रकार के विज्ञान पर मानो उनका अधिपथ्य रहता, देखो उनका विज्ञान अपने में अद्वितीय कहलाता था। तो ब्रह्मचारी कवन्धि ने वह कहा अमृतम् ब्रह्मा वर्णोसुतः हे प्रभु देखो वह उद्दालाकाम् भूतम् ब्रह्मे याज्ञम् ब्रीही क्रतम् देवाः। जब महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज से यह कहा कि महाराज आपाम् व्रीहे के वृति तो उन्होंने कहा देखो दालभ्य बोले कि हे प्रभु मैं यह जानना चाहता हूँ कि परमात्मा विभु है या अणु है? उन्होंने कहा विभु किसे कहते हैं तुमने अब तक क्या जाना है? तो मुनिवरो! देखो महर्षि प्रवाहण ने कहा कि प्रभु हम तो परमपिता परमात्मा को विभु और अणु दोनों स्वीकार करते हैं। उन्होंने कहा एकोकीरूपाम् एका मी दोहम् ब्रह्मे व्रतम् वेद का मन्त्र कहता है कि एक ही मानो देखो एक ही पर आचरण किया जाता है द्वितीय पर आचरण नहीं किया जाता इसीलिए तुम्हारा यह वाक् अकथनीय हो जाएगा। इसलिए कथनम् ब्रह्मा व्रत्यम् देवत्वाम् कथन के वाक्यों को प्रगट करो। तो मेरे प्यारे! वह प्रवाहण जी ने कहा प्रभु। आगे मैं इतना नहीं जानता। मेरे पुत्रो! उन्होंने कहा तो जानने के लिए सदैव तत्पर रहो। उन्होंने कहा कि विभु और अणु के सम्बन्ध में अब तुम दृष्टिपात करो। तो बेटा! सब ऋषि विद्यमान हो गये। उन्होंने रेणकेतु नाम के परमाणु का

विभाजन किया तो एक-एक परमाणु में बेटा! देखो सर्वश सृष्टि का दर्शन होने लगा। उन्होंने कहा जब एक-एक परमाणु में देखो सृष्टि का दर्शन है तो यह मानो देखो अणु विभु नहीं हो सकता क्योंकि विभु सर्वत्रता में विद्यमान रहता है तो इसीलिए अणु सर्वत्रता में विद्यमान नहीं अणु के गर्भ में वह व्याप्त रहता है इसीलिए देखो वह विभु कहलाता है। जैसे यागाम् भूतम् ब्रह्मा लोकाम् जैसे इस मानो देखो इसमें वशीभूत रहता है उसी में मुनिवरो! देखो उसमें उसकी प्रथा कहलाती है और उसी में वह निहित हो जाता है।

आओ मुनिवरो! देखो मैं तुम्हें दर्शनों के क्षेत्र में नहीं ले जा रहा हूँ। विचार-विनिमय केवल यह महर्षि भारद्वाज मुनि के यहाँ अणु और विभु के ऊपर बड़ा विचार-विनिमय होता रहा। परन्तु ब्रह्मचारी कवन्धि ने एक ही वाक् कहा सम्भूति ब्रह्मा लोकाम् वह परमपिता परमात्मा तो सम्भूति है। उन्होंने कहा सम्भूति तो है परन्तु सभ्माभूतम् ब्रह्मे अन्हम, ब्रह्मे भूत व्रतम्! तो मुनिवरो। देखो वह प्रवाहण ने कहा कि महाराज विभु है वह, उसमें अवृतियाँ तो हैं। तो इस प्रकार मुनिवरो! देखो अपना कथन कहते हुए वह शान्त हो गये, अपने आसन पर विद्यमान हो गये। तो महर्षि भारद्वाज मुनि महाराज, प्रवाहण, शिलक और दालभ्य इन सर्वत्र वैज्ञानिकों ने बेटा! परमात्मा को देखो वह परमपिता परमात्मा को विभु के रूप में स्वीकार किया अणु के रूप में नहीं क्योंकि अणु में, अणु में प्रतियाँ होती हैं वह एक दुसरे को नहीं जान पाता परन्तु देखो अणु का एक तारतम्य बन जाता है वह किसी की चेतना से चेतनित हो करके मेरे प्यारे! एक दूसरे का गठन करता रहता है।

आत्मा अणु है

आओ बेटा! देखो मैं इस सम्बन्ध में विशेषता में तुम्हें नहीं ले जा रहा हूँ। विचार विनिमय केवल यह कि आज का हमारा वाक् क्या कह रहा है ब्रह्मचारी अमृतम् शिकामकेतु उद्दालक की चर्चाएँ मैं कर रहा था। शिकामकेतु उद्दालक के यहाँ नाना प्रकार के परमाणुओं के ऊपर

अन्वेषण होता रहा परन्तु देखो उनमें अमृताम् भूतम् ब्रह्मा देखो भूत आत्मा को जानने का उन्होंने प्रयास किया। आत्मा देखो पंच महाभूतों के लोक में रहने से वह पंचमहाभूताम् इन्द्र ब्रह्मे देवाम् वह पंचाग्नि कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो जब उसका बन्धन समाप्त हो जाता है तो मोक्षम् भूतम् ब्रह्मे अनव्रत प्रही तो यहाँ जीवात्मा को बेटा! देखो ऋषि ने अणु के रूप में परणित किया है। तो आओ मेरे प्यारे! देखो मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि परमात्मा विभु है और जीवात्मा अणु के रूप में विद्यमान रहता है। वेद का मन्त्र कहता है अनम् ब्रह्मे क्रतम् ब्रव्हा आत्माम्। मेरे पुत्रो! देखो इस प्रकार वह अपना निर्णयात्मक अपना विचार देते रहे हैं। तो आज मैं बेटा! देखो इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा नहीं केवल यह कि मुनिवरो! आज का हमारा वाक् क्या कहता है क्या ऋषि-मुनि अपने में बेटा! देखो अपने में निहित होते रहे हैं।

ऋषि मुनियों का अनुसन्धान

मैं पृथ्वी की चर्चा कर रहा था यह पृथ्वी वसुन्धरा है और वसुन्धरा माता है और वसुन्धरा नाम बेटा! देखो उस परमपिता परमात्मा का जिसके गर्भस्थल में सर्वत्र ब्रह्माण्ड मेरे प्यारे! देखो ओत-प्रोत रहता है सर्वत्र ब्रह्माण्ड उसी में निहित रहता है वह अमृतम् देखो वह परमपिता परमात्मा अपने में मानो देखो वसुन्धरा कहा जाता है। इसका प्रत्येक वेद मन्त्र अपने में गुणगान गा रहा है, प्रत्येक वेद मन्त्र बेटा! अपनी आभा प्रगट कर रहा है अपने में अपनेपन को दर्शा रहा है। तो आओ मुनिवरो! देखो आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह क्या मुनिवरो! देखो हमारे यहाँ ऋषि-मुनि एक-एक वाक् पर अनुसन्धान करते रहे हैं, विचार विनिमय करते रहे हैं, विज्ञान के गर्भ में जाने का प्रयास करते रहे हैं क्योंकि विज्ञान अपने में अद्वितीय क्रियाकलाप है और देखो परमपिता परमात्मा का जो विज्ञान है वह अनन्तमयी माना गया है क्योंकि वह आत्माम् भूतम् बेटा! आध्यात्मिकवाद और भौतिक विज्ञान दोनों का परस्पर समन्वय रहता है और एक दूसरे के पूरक

कहलाते हैं तो इसीलिए मानो देखो एक दूसरे में समाहित रहते हैं इसीलिए वह परमपिता परमात्मा वसुन्धरा के रूप में वर्णित किया गया है।

महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज और चाक्राणी गार्गी सम्वाद

आओ मुनिवरो! देखो मुझे स्मरण आता रहता है चाक्राणी गार्गी की वह चर्चाएँ मुझे स्मरण हैं जब राजा जनक के यहाँ महर्षि याज्ञवल्क्य और उन दोनों का मुनिवरो! सम्वाद होता रहा है, उनका दोनों का विचार विनिमय होता रहा है। तो चाक्राणी गार्गी अमृतम् ब्रह्मा देखो महर्षि राजनम् ब्रव्हा देखो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान हैं परन्तु राजा जनक ने देखो एक सौ एक गऊओं के सिंघों पर स्वर्ण को मथकर के और उन्होंने अपनी यह घोषणा की कि जो ब्रह्मवेत्ता विशेष है वह इन गऊओं को अपने आश्रम में ले जा सकता है। तो बेटा! देखो उस सभा में ब्रह्मचारी कृतिका और देखो अश्वल इत्यादि सर्वत्र ऋषि-मुनि इसमें महात्मा अर्द्धभाग और दिग्ध भी थे और याज्ञवल्वय मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान हो करके ब्रह्मचारियों से बोले हे ब्रह्मचारियो जाओ इन गऊओं को—यज्ञदत्त ब्रह्मचारी से कहा जाओ अपने आश्रम को ले जाओ। मेरे प्यारे! ब्रह्मचारी गऊओं को ले गये। अब ब्राह्मण ब्रह्मवेत्ताओं में एक मानो क्रान्ति हुई। उन्होंने कहा क्या यह याज्ञवल्क्य सब बुद्धिमानों से महान् है, यह अपने को ब्रह्मवेत्ता जानता है। महात्मा दिग्ध ने कहा क्या हे ब्रह्मवेत्ता तुम अपने को ब्रह्मवेत्ता स्वीकार करते हो? उन्होंने कहा नहीं मैं ब्रह्मवेत्ता नहीं हूँ तुम बारी-बारी प्रश्न करो मैं जानता हूँगा तो तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दे सकूँगा। मुझे तो आश्रम के लिए आवश्यकता है, क्या यह ब्रह्मचारियों को आवश्यकता है गऊ ले जाने की यह गऊ ले गये हैं आप बारी-बारी प्रश्न करो। मेरे प्यारे! देखो महात्मा दिग्ध अपने आसन पर विद्यमान हो गये। महाराजा अश्वल ने कहा क्या महाराज अपने में तुम ब्रह्मवेत्ता हो? उन्होंने कहा नहीं तुम प्रश्न करो इस वाक् को देखो बारम्बार इसका पुनरुक्ति वाक् क्यों उद्गीत गा रहे हो? मेरे प्यारे! देखो जब उन्होंने इस प्रकार उद्गीत

गाया तो वह अपने में मौन हो गये, शान्त हो गये। मानो सभा समनं ब्रह्मे सान्तवना को प्राप्त हो गये सब ब्रह्मवेत्ता।

चाक्राणीं गार्गी उपस्थित हुई और चाक्राणी गार्गी ने कहा हे ब्रह्मवेत्ताओं यदि तुम्हारी आज्ञा हो तो मैं इस ब्रह्मवेत्ता से दो प्रश्न करूँ? उन्होंने कहा अवश्य कीजिए। तो मुनिवरो! देखो चाक्राणीं गार्गी ने कहा हे प्रभु मैं आप से कुछ प्रश्न करना चाहती हूँ। उन्होंने कहा अवश्य कीजिए और यदि मैं तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर जानता हूँगा तो अवश्य उत्तर दूँगा। मेरे प्यारे! ऋषि-मुनि निरभिमानी होते हैं क्योंकि परमात्मा निरभिमानी है इसलिए उसका जो भक्तजन है वह भी निरभिमानी होता है। तो उस समय देखो ऋषि ने कहा क्या मैं जानता हूँगा तो तुम्हारे प्रश्नों का अवश्य उत्तर दूँगा। मेरे प्यारे! चाक्राणी ने कहा क्या प्रभु आप जानते हैं आप मेरे प्रश्न का उत्तर अवश्य दीजिए। उन्होंने कहा तुम प्रश्न करो। उन्होंने कहा प्रभु मेरे भुजों में मानो एक तरकश है और उस पर देखो वह तीर कसा हुआ है अमृतम् देखो कमान पर तीर कसा हुआ है उसका लक्ष्य कोई जानना चाहता है। अमृतम् ब्रह्मे दो अपप्रव्हा हे प्रभु उसका लक्ष्य क्या है? तो उस समय मुनिवरो! देखो ऋषि ने कहा हे देवी तुम यह क्यों जानना चाहती हो? उन्होंने कहा प्रभु मेरे जो भुजों में कमान है उस पर एक मानो देखो तीर कसा हुआ है लक्ष्य तो उसका कोई-न-कोई होना चाहिए। उन्होंने कहा अवश्य। तब ऋषि चिन्तन करने लगा यह तो प्रसंग मानो देखो अब क्षत्रिय का तो नहीं है यह ब्रह्मवेत्ताओं का प्रश्न है तो उसने कहा कि तुम्हारे कमान पर मानो देखो प्राण रूपी कमान पर मन रूपी तरकश कसा हुआ है और वह मानो अम्ब्रह्म ब्रह्मे देखो उसका लक्ष्य ब्रह्म है ब्रह्माण्ड ब्रह्म ब्रह्मे व्रतम् तुम्हारा जो मन और प्राण है इन दोनों को एकाग्र करते हुए मानो देखो जब तुम तरकश ब्रहे देखो लक्ष्य को प्राप्त हो जाओगी तो वही लक्ष्य ब्रह्म कहा जाता है।

प्रत्येक मानव नाना प्रकार के क्रियाकलापों में सदैव तत्पर रहता है, नाना प्रकार के द्रव्यपति बनना चाहता है जिससे मैं सुखद हो जाऊँ

और नाना प्रकार के प्राणायाम करता है, साधना करता है, साधना में रत्त होता रहता है इसलिए कि मैं प्रभु को प्राप्त हो जाऊँ, मैं सुखद को प्राप्त हो जाऊँ। मेरे प्यारे! देखो नाना प्रकार का स्वाध्याय करता है, दर्शनों का अध्ययन करता है परन्तु उसका एक ही मन्तव्य है कि मैं सुखी हो जाऊँ, मैं आनन्द को प्राप्त हो जाऊँ और मैं परमात्मा को प्राप्त कर सकूँ। मैं अपने लक्ष्य पर जा सकूँ।

मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि ने कहा देवी इसीलिए प्रत्येक मानव अपने-अपने क्रियाकलाप में लगा हुआ है। माता कहती है कि मेरे पुत्राम् भूतम् ब्रह्मा मानो मेरा पुत्र मेरे लिए सुखद होगा, पति मेरे लिए सुखद होगा। यह संसार सुखद की कामना करता रहता है। परमपरागतों से ही परमात्मा की आभा में रत्त रहता है। हे देवी देखो तुम्हारे यह जो प्राण है यह कमान है और मन मानो देखो तीर कसा हुआ है उसका लक्ष्य ही ब्रह्म कहा जाता है और ब्रह्म को जानने के लिए मानव नाना प्रकार का प्रयास करता रहा है। आज से नहीं परम्परागतों से सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके ही मानव वर्तमान के काल तक प्रयास में लगा रहा है और देखो यह गति चलती रहेगी क्योंकि अपनी इन्द्रियों से परे अवर्चनीय विषय बन जाता है इसलिए इसमें मानव अपने में मानो देखो भ्रमित हो जाता है।

मेरे प्यारे! देखो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा देवी तुम मानो देखो अपने तरकशम् ब्रह्मे वर्णस्सुते प्रत्येक मानव अन्त में जब लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है तो **लक्ष्य उसे कहते हैं जहाँ हमारे अन्तःकरण में जो नाना प्रकार के संस्कार हैं उन संस्कारों से विहिन होने का नाम ही मानो देखो मोक्ष की पगडण्डी कही जाती है और जब यह देखो संस्कारों से विहीन हो जाता है, विहीन हो जाना ही मानो देखो प्रभु की उस आनन्दमयी पगडण्डी को प्राप्त करना है।**

कारण शरीर की महत्ता

मेरे प्यारे! देखो आत्मा के तीन प्रकार के जो शरीर हैं देखो सबसे प्रथम स्थूल, सूक्ष्म और कारण कारणाति ब्रह्मणे कारणाति दिव्यम् ब्रव्हा

देवत्वाम् लोकाः यह कारण लिंग में प्रवेश हो करके ही अपने प्रभु की आनन्दमयी पगडण्डी को ग्रहण कर सकता है।

संस्कारों का रथ

मेरे प्यारे! मुझे वह काल स्मरण आता रहा है जिस समय देखो महर्षि अङ्गिरस गोत्र मेरे प्यारे! अङ्गिरस गोत्र में एक व्रेतकेतु ऋषि थे, व्रेतकेतु अङ्गिरस उन्हें कहा जाता था। वह एक समय बेटा! देखो मौन हो गये और अपने चित्त के संस्कारों को अपने में देखो धारणा के आधार पर अपने में धारयामि बनाने लगे और यह विचारने लगे मैं इनको प्रत्यक्ष करना चाहता हूँ। उन्होंने पच्चासी वर्ष का मौन रह करके और प्राण से अमृताम् प्रतियों को प्राप्त करके अपने चित्त के संस्कारों को जानने का प्रयास किया। चित्रम् रथम् ब्रह्मा चित्रो देवत्वाः **चित्त का ही क्योंकि रथ बनता है और वह रथ ही द्यौ लोक को प्राप्त होता रहता है।** तो इसीलिए देखो संस्कारों के रथ को जानने का उन्होंने प्रयास किया।

मेरे प्यारे! देखो विचार विनिमय क्या महर्षि याज्ञवल्यक मुनि महाराज ने कहा देवी तुम्हारे मानो देखो तुम्हारे भुज में जो तरकश कसा हुआ है, कमान है और कमान के ऊपर जो तरकश है मानो उसका लक्ष्य ही ब्रह्म है तुम ब्रह्म को पाना चाहते हो, अन्तःकरण में संस्कारों को परमात्मा को समर्पित करना चाहते हो इसलिए तुम्हारा जो लक्ष्य है वही ब्रह्म है। तो मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें दर्शनों की चर्चा में चला (ले) गया हूँ, यह दार्शनिक विचार अपने में बड़ा अद्वितीय कहलाता है। हमारे यहाँ ऋषि-मुनि अपने में प्रायः देखो अपनी आभा को प्राप्त होते रहे हैं। आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट नहीं करूँगा विचार-विनिमय केवल हमारा यह क्या मुनिवरो! देखो उन्होंने जब यह प्रश्न किया तो अमृताम् व्रते देवत्वाम् उन्होंने मोक्ष की पगडण्डी तक चाक्राणी के प्रश्नों का उत्तर दे दिया। चाक्रार्णी अपने में मौन हो गई और मौन हो करके बोली कि

प्रभु आपको धन्य है और उन्होंने यह घोषणा की कि हे ब्रह्मवेत्ताओं यह ऋषि तुममें मानो विशेष ब्रह्मवेत्ता है। इसलिए तुम मानो बारी-बारी प्रश्न करोगे तो ऋषि अवश्य तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर देगा, तुम्हारी शंकाओं का निवारण हो जाएगा। मेरे प्यारे! देखो वह तो अपने में शान्त हो गई।

तीन प्रकार की आहुति

देखो, उनके पुरोहित अश्वल उपस्थित हुए और अश्वल ने कहा कि प्रभु मैं जानना चाहता हूँ क्या यह देखो तीन प्रकार की यजमान आहुति देता है एक चटाचट है, एक अवृत्ति है, एक पुनरुक्ति है इसका अभिप्राय क्या है? उन्होंने कहा तीन प्रकार के देखो इस शरीर में विचार बनते रहते हैं—सबसे प्रथम जो चटाचट है वह राज्य वह एक तमोगुणी देखो वह रजोगुण कहलाता है और जो मानो देखो निस्वार्थ होता है वह सतोगुण कहलाता है और जो मानो देखो अमृताम् तत्वों को प्राप्त होता है वह मानो देखो पुत्राम् भूतम यागाम् देवः रुतम देखो जो पुत्रम् भूतम् ब्रीही यागा वह इस प्रकार का याग करता है तो वह तमोवृत्ति में रत्त हो जाता है। तो मेरे प्यारे! परन्तु तीनों में सतोगुण की प्रतियाँ कहलाई जाती हैं। तो यह विचार दे के बेटा! ऋषि अपने में मौन हो गया। अश्वल ने यह वाक् स्वीकार कर लिया।

मेरे प्यारे! विचार क्या मानव के तीन प्रकार के विचार हैं तीन प्रकार की प्रतिभा में सदैव मानव रत्त रहता है। सबसे प्रथम सतोगुण है, सतोगुण पालना का मूलक है और रजोगुण मुनिवरो! देखो वह भी पालना का, अनुशासन का मूलक कहलाया जाता है और तमोगुण मुनिवरो! देखो उत्पत्ति के मूल में रहता है। इसलिए परमपिता परमात्मा तीनों गुणों वाला है वह परमात्मा देखो इसलिए पालक है, रक्षक है और मुनिवरो! देखो उत्पत्ति के मूल में विद्यमान है। तो परमपिता परमात्मा के ऊपर हमारा सदैव अन्वेषण होना चाहिए, विचार-विनिमय होना चाहिए जिस विचार को ले करके हम प्रायः अग्रणीय बनते चले जाएँ और हम

देखो अपनी मानवीयता में सदैव तत्पर हो जाएँ और आत्मा और मन मस्तिष्क को एकाग्र करते हुए परमात्मा को अपने को समर्पित करते रहें ऐसी बेटा! देखो हमारी मनोभावना रहती है। ऐसा ही हमारा वेद का मन्त्र कहता है।

आज मैं विशेष चर्चा तुम्हें नहीं प्रगट करूँगा। **विचार विनिमय क्या क्या हम अपने में मानो याज्ञिक बने रहें और अपने मन से देखो अपने जीवन को पवित्रता में ले जाएँ जिससे हमारा मन मस्तिष्क एकाग्र हो करके परमपिता परमात्मा के लिए हम सदैव तत्पर हो और उसको जानते रहें।** तो यह है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक् उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय यह क्या हम अपने में देखो पृथ्वी को वसुन्धरा के रूप में वर्णित करते रहें और माता वसुन्धरा है और प्रभु भी वसुन्धरा के रूप में परणित रहा है तो इसीलिए हमारा जीवन माता वसुन्धरा के सम्बन्ध में सदैव विचार-विनिमय करता रहे यह है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा तो मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रगट करूँगा।

आज के वाक् उच्चारण करने का अभिप्रायः यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते इस संसार सागर से पार हो जाएँ। यह है बेटा! आज का वाक्। अब समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ कल प्रगट करेंगे।

ओ३म् देवाः आभ्याम् मनु रथम् आप्याम् रेवा गतम् माम रथाऽम्

ओ३म् सर्व मन्था माम वाचनम

ओ३म् यश्शचाऽम् वेवाऽम्

अच्छा भगवन्!

दिनांक : 29 जुलाई, 1992

स्थान : खुरर्मपुर, गाजियाबाद

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. यज्ञ का अभिप्राय यह है कि अग्नि को प्रदीप्त करके विचारों को सुगन्ध में लिपटा देना चाहिए।
2. प्रत्येक वेद मन्त्र, प्रत्येक वेद मन्त्रों की आभा उस दैवी यज्ञ के समीप रहनी चाहिए।
3. अखण्डमयी माता की अखण्ड ज्योति का प्रकाश माता के गर्भस्थल में होता है।
4. अखण्ड ज्योति की सहायता से ही मानव के उदर की जठराग्नि कार्य कर रही है।
5. मानव के शरीर में जब तक अखण्ड ज्योति जागरुक है तब तक मानव जीवित रहता है।
6. अनुष्ठान का अभिप्रायः संकल्प है।
7. यज्ञ का नाम ही अनुष्ठान कहा जाता है। यज्ञ के अनुष्ठान के बिना सांसारिक भोग विलास सारहीन है।
8. दुर्गे उसे कहा जाता है जो दुर्गुणों को नष्ट करने वाली है। जो अनुष्ठान करता है माता उसके दुर्गणों को नष्ट कर देती है।
9. संयम, अनुष्ठान, यज्ञ और समर्पण के द्वारा ही प्रकृति के इस विज्ञान को जाना जाता है।
10. संकल्पवादी कौन होता है? जो श्रद्धालु हो। श्रद्धालु कौन होता है? जिसका हृदय पवित्र होता है। जब तक हृदय पवित्र नहीं होता मानव में श्रद्धा नहीं होती।
11. श्रद्धा से ही संकल्प धारण किया जाता है।
12. यज्ञ एक अखण्ड ज्योति है वह प्रत्येक मानव के गृह में प्रदीप्त रहनी चाहिए।
13. यज्ञ का अभिप्राय है शुभ कर्म।
14. सारे संसार में रमी हुई अखण्ड ज्योति योगी के ब्रह्मरन्ध्र में विराजमान रहती है।
15. ज्योति एक चेतना है। जिसको अखण्ड ज्योति का प्रकाश प्राप्त हो जाता है वह अखण्ड ज्योतिमय बन जाता है।
16. योगीजन ज्योति के प्रकाश को जानते हैं, जो ब्रह्मचारी होते हैं, वह ज्योति के प्रकाश में ब्रह्म को चरते हैं।
17. ब्रह्मरन्ध्र के पिछले भाग में वह ज्योति प्रकाशमयी बन जाती है।
18. हमें इस अखण्ड ज्योति को जानने का प्रयास करना चाहिए।

OM

Lord Krishna

(Lecture delivered by Brahmrishi Krishna Dutta Ji on the 3rd Sept. 1969 at C-3/9 Model Town, Delhi in a state of trance- a supernatural phenomenon which presents an interesting field of research and enquiry for the seekers of Truth. Contempt before contemplation will always be a bar in the promotion of knowledge.)

Imagine a number of holy souls gathered together in a serene atmosphere for listening to a Preceptor. Acknowledging the reverential regards from the audience. the Preceptor addresses as follows :-

Be blessed !

Seers, Look ! Today again, as before, I had been chanting some charming Vedic hymns absorbed in ecstatic delight in this august presence. You must have very well followed which of the vedic hymns were recited. The fine disciplines which we observe in the process of perceiving the phenomenon world have been well seasoned from generations to generations with those principles on the basis of which a kind of super naturalism naturally starts evolving in man's life. From time to time there has been descent of great personalities amidst us and in their descent, an element of mystery has ever prevailed. Traditionally it has been the duty of man to strive for the uplift of Vedic Culture because the qualitative definition of man has been derived on the basis of his relfecting capacity. Only that person deserves to be classifed 'man-as-rnan' who can reflect, who can focus his mind. From the lives of such great persons only a beam of Glory emanates. So my dear seers, when we make it a point to weigh and consider every expression of thought in the right discriminative perspective, we shall verily begin to experience our span of life truly glorified.

So my dear seers, let us move ahead. We propose to talk about some great person today. When and where great saviours are born, an era of brightness for the safety of beings is ushered. Spirited by the light of brightness humanity feels

itself securely based like a grounded pillar. Let us be reviewing today that from time to time we have had advent of such illuminating personalities. How wonderful their lives have been from generation to generation ! Earlier also I have been mentioning about them. Today also a recollection is surging forth. To-day I have been visualising the life sketch of Lord Krishna which is worthy of being contemplated upon at every day-dawn. Every moment in Lord Krishna's life was glorious. His system of perception and the methods of reflection ever displayed excellence. To adopt those methods we remain so very eager to-day. On those very lines we would like to base our analytical studies of Science and Metaphysics. We should again have an access to those scientific truths the mastery of which was expressive of the singular uniqueness of Lord Krishna's comprehensive system of study.

O, Sages ! Lord Krishna had pronounced a statement at the time when he was in the midst of the Kaurava and Pandava forces at Kurukshetra and his friend Arjuna was with him. Arjuna had become mentally shattered after having surveyed the rival sides lined up for conflict. When he was so absorbed in a sorrowful plight, Lord Krishna had said. "Whenceforth this delusory attachment has cropped up in you ? Listen ! The man who gives up 'Dharma' out of attachment loses hold both in this world and the world hereafter. Therefore do not be grieved and do not give up action in fulfilling your duty as a protector of righteousness."

When Arjuna asked, "Lord, you contend that you Wisdom of the Ancient Rishis imparted this knowledge to 'Surya' and Akshvaku who lived long long ago where as you obviously belong to the present age—", then Lord Krishna had categorically sated. "O, Arjuna ! I know about the previous births but you do not." So my beloved seers! We have to elevate ourselves to those human heights where we become the knowers. Knowers of what? Knowers of the glories of our previous lives and, having known that, we should be able to cross over the ocean of the being and the non-being.

Let us today be reflecting upon how illustrious Lord

Krishna's life was. What was the form that Lord Krishna assumed when he imparted knowledge to Akshavaku and the Maharaja Surya ? Who was he who communicated the Vedic revelations and the knowledge of physical science to Maharaja Surya ?

Lord Krishna's soul was the soul of Lord Manu

My dear seekers! it is said that Lord Krishna's soul only was the soul of Lord Manu. That is to say that Lord Krishna's soul only animated the body of Lord Manu. Through the ethics or disciplines enunciated by Lord Manu, it is readily noticed that a lustre of the 'fire-principle' always characterised his life. First of all Lord Manu constituted the governing system and, while so doing, he proclaimed that it is the duty of the state to protect both 'Dharma' and mankind. The sovereignity which can not afford to do so should never be recognised. The first manifestation of this soul (i.e. Lord Krishna's) was in the form of Lord Manu. Through that form he taught Maharaja Surya and Akshavaku. Surya was the name of Lord Manu's son. Surya was a 'Rudra' King. His son's name was Akshavaku. To them only Lord Manu conferred the thought-currents of knowledge and the governing constitution and, accorded also the Brahma knowledge. He then left for his heavenly abode.

Lord Krishna and the Cow

I may similarly be accounting for many other subsequent incarnations of Lord Manu but, in the present context, it will not be worthwhile to do so. I have only talked of the foremost manifestation. Today I am focussing attention upon Lord Krishna's life and his philosophy towards duty and action. Indeed it will not either do me much good if I continue talking about his glories or his surface plays. But what I have to pay attention to is that which type of human ethics Lord Krishna's soul has tried to propound from era to era through his varied manifestaions. Caressing the Vedic outlook Lord Krishna has emphasized that social thought currents and the human values should be enriched by protecting the cows (representing cattle-wealth for material progress and by mastering the sense-organs

(for spiritual and moral uplift) My dear ones; I remember that Lord Krishna used to playa note while walking-through a pathway. That note would produce such a captivating musical reverberation that the cows would be enchanted to yield milk, out of pleasure. When the cattle yields milk in a pleasure mood, then the yield is intellect-promoting for the master. Today, when the master desires the cattle to yield milk, it does not have the same pleasant urge. The great teachers, including Lord Krishna have designated such milk as blood. This milk would never crystallize the human intellect which is the product of happiness. Lord Krishna has, therefore, laid primary store upon loving the cattle folk. How earnest he was for their welfare and protection, I remember that, even while walking about, people were absorbed in Vedic thoughts and were also intent on caressing the cows. The cow wealth was considered to be the symbol of national status. The milk of the cows purifies the human intellect and renders it capable of higher flights. It is, therefore, imperative for a sovereign state to promote good breed cattle and then it becomes the duty of the individual to maintain and protect that wealth.

Lord Krishna Was a great scholar of vedas

So my beloved sages ! How lord Krishna's life was characterised with great mystery and Wonder ! Elucidating upon various Subjects he has sermoned that we should try to know that illuminating or animating and unchangeable Plinciple by knOwing which We are able to cross Over the ocean of this phenomenon World. You see, Lord Krishna Was always immersed in the studies of the Vedas. His consort would implore, "You are not even taking Your food. You are always absorbed in such a profound Subject 6at you loose awareness of the world." Lord Krishna would rejoin. "I can't help it. This wisdom of the Vedas is so very Captivating. My heart is delighted and I do not feel like giving it up." Behold sages! The Lord and his consort would sit in a place, discourse and discussions on the Vedas Would resume and Continue. Thereby they would satiate their hearts with the contention that their lives blossomed under the Vedic thought-currents.

Discovery of Maundhuk Missile & Swan Sham Magnetic Line by Lord Krishna

Now sages look ! Wheareas lord Krishna's life was dedicated to highlighting the Vedic culture and the caressing of the cow·wealth, he was par excellent in the wisdom of the physical sCiences as well. How deep he delved in physical sCiences I I can recollect, on tuning to the Mahabharat peiod, that how much knowledge of science Lord Krishna possessed. He had developed different types of instruments out of the Vedas. He had known the secret of the 'Maundhuk' line. He had also developed an instrument 'Somdhuk' by name, which had his OWn Speciality, What Was the Speciality? It is mentioned in Mahabharat and it has been otherwise heard also that when the question of killing Maharaja Jaidrath was invloved, Maharaja Arjuna had taken a vow that he Would immolate himself if he could not succed in killing Jaidrath before sun-set. On that fateful day the preceptor Dronacharya and Duryodhana etc. had concealed Jaidrath at such a place in their midst where Arjuna could have no sense of him. But Lord Krishna pondered as to what could be done "If the sun has set and Jaidrath could not be traced", Lord Krishna worried. "Then my friend Arjuna will surely end his life." Then the Lord released the 'Maundhuk' missile in space. When it was so released the sky was overcast and it looked as if the Sun had set.

Mystery of Jaidrath's death

Sages, look! At that time Jaidrath etc. all appeared on the scene with the intention of watching Arjuna's self-immolation. When they were all seated in the near vicinity of Arjuna then Lord Krishna released the counter missile, Somdhuk' by name, which nullified the effect of the previous one and the Sun was there still and Jaidrath was out- exposed in his presence. Why should not Arjuna grab the opportunity of piercing Jaidrath to death with his arrows? Look sages! How much developed Science was at that time ! Lord Krishna had further cautioned Arjuna that if Jaidrath' s head fell on the ground, his own (i.e. Arjuna's) head too would come to

the ground. Jaidrath's head had to be suitably despatched. It is said that Jaidrath's head was carried on the arrows and made to drop in the lap of his father Apreti who was observing austerity on the banks of the river Ganges. Before he could realize what it was as the head fell down, Apreti's head also came down by the same arrow. It was the effectiveness of that weapon that both the father and the son were so mysteriously and simultaneously killed. What we mean to arrive at is that we have to appreciate today how much super developed Lord krishna's scientific knowledge was.

So sages ! Whereas Lord Krishna had a constant urge towards the study of spiritual science, he excelled in the quest of physical sciences as well. He was always engaged In the development of scientific equipment and discovered the Swanbham Rekha (A kind of magnetic line) whose description has been very beautifully given in the Vedas. With the help of that study he delved in to the subtle atomic character of the 'Yajna' fumes which pervade the space. Thereby he developed the instrument and perfected the knowledge of the aforesaid line. When the battle of Mahabharat was to be fought Lord Krishna had realised that if he did not develop the counter and control and technique, the world would be destroyed.

It is said that he bounded the entire field of the Mahabharat warfare with that line. The effect of that line or the scientific speciality of it was that the poisonous a.ornic dust of the war missiles would be confined to the bounded area. Not only that, it set even the vertical limits to the atomic outbursts to some four to five 'Yojans' above so that the other beings outside the war sphere would not be destroyed. Lord Krishna excelled in such types of scientific knowledge. So while he was ever intent to embrace the Vedic culture his life was always graced with the Fire-principle on account of which he could venture far into the fields of both spiritual wisdom and scientific knowledge.

Pujyapad Gurudev

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

आस्था

श्रीमति ब्रजबाला धर्मपत्नि श्री राजकिशोर त्यागी जी निवासी ग्राम मकनपुर, जिला गाजियाबाद, उ.प्र. ने प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी अपनी प्रिय पौत्री आस्था सुपुत्री श्रीमति अंजलि एवम् श्री हरिओम त्यागी जी के जन्मदिवस की शुभ बेला के आगमन पर 1101 रु. का सात्त्विक सहयोग समिति के प्रकाशन के कार्य के लिए प्रदान किया है जिसके लिए समिति हृदय से आभार प्रकट करती है।

श्री त्यागी जी व उनकी धर्मपत्नि प्रतिदिन प्रभात बेला में दैनिक अग्निहोत्र काफी लम्बे समय से करते चले आ रहे हैं और उसके पश्चात् पूज्यपाद गुरुदेव के प्रवचनों का स्वाध्याय भी निरन्तर करते हुए अपनी स्थिति को ऊर्ध्वागति प्रदान करने में संलग्न हैं। इसके साथ–साथ प्रत्येक रविवार को अपने गृह पर एक डा. साहब की निशुल्क सेवा में सभी आने वाले मरीजों को अपनी तरफ से फ्री दवाइयों का वितरण करते हुए अपनी प्रवृत्तियों को मानव कल्याण के लिए एक साकार रूप का दर्शन प्रस्तुत कर रहे हैं।

यह परिवार बड़ी उदारता से धार्मिक कार्यों में अपना सहयोग सभी क्षेत्र में बनाए हुए है और विशेषकर पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के कार्यों में श्री गांधी धाम समिति लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत और वैदिक अनुसन्धान समिति, दिल्ली को निरन्तर तन, मन व धन से सहयोग करने में संलग्न हैं।

श्रद्धालु परिवार के सभी सदस्यों को पुनः से आभार प्रकट करते हुए समिति पौत्री के जन्मदिवस की बारम्बार शुभकामनाएं प्रदान करते हुए परिवार के सभी सदस्यों के लिए सुख, शान्ति, दीर्घआयु एवम् सर्वतोन्मुखी समृद्धि के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति

।। ओ३म् ।।

जन्मदिन की शुभकामनाएँ

वैदिक कुमार

श्रीमति पूनम त्यागी व श्री संजीव त्यागी जी निवास स्थान बल्लभगढ़, हरियाणा (मूल निवासी ग्राम दिनकरपुर, जिला मुजफ्फरनगर) ने अपने सुपुत्र चिरन्जीव वैदिक कुमार के शुभ जन्मदिवस 8 मई 2017 के आगमन पर 5101/- रु. का सात्त्विक सहयोग प्रतिवर्ष की भाँति उदारता से प्रदान किया है। जिससे कि ऋषि मुनियों के क्रियाकलाप को ऊर्ध्वा गति प्रदान करते हुए प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप में उनके आशीर्वाद की छत्र-छाया भी निरन्तर स्मरण रूप में बनी रहे। श्री त्यागी जी समिति के प्रकाशन के कार्य में काफी लम्बे समय से सहयोग निरन्तर बनाये हुए हैं और प्रतिमाह एक हजार की राशि 'मासिक सहयोग' के रूप में प्रकाशन के लिए प्रदान कर रहे हैं। जिसके लिए समिति हृदय से बारम्बार आभार प्रकट करती है।

अपने माता-पिता जी की छत्रछाया से ही श्री त्यागी जी पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज के ज्ञान से जुड़ गये थे क्योंकि इस याज्ञिक परिवार ने पूज्यपाद गुरुदेव की अनुपम कृपा का शुभ लाभ उनके द्वारा यज्ञों व प्रवचनों के माध्यम से अनेक बार उठाने का सौभाग्य प्राप्त किया। उसी धारा को निरन्तर जागृत रखते हुए अपने सेवाकाल को भी बड़ी निष्ठा व कर्मठता से करते हुए लाक्षागृह बरनावा में आयोजित यज्ञों में अनेक बार पति-पत्नि यजमान बनकर और साहित्य का निरन्तर अध्ययन करते हुए अपने को परिवार सहित ऊर्ध्वा गति प्रदान करने में संलग्न हैं। समिति त्यागी जी के सौभाग्यशाली पुत्र प्रिय वैदिक कुमार को जन्मदिवस की शुभकामनायें प्रदान करते हुए उज्ज्वल भविष्य के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करती है और समस्त परिवार पुनः से आभार प्रकट करते हुए सुख, शान्ति, दीर्घ आयु व सर्वतोन्मुखी उन्नति के लिये भी ईश्वर से प्रार्थना करती है।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	80.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	60.00
4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	60.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	80.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	40.00
10.	शंका-निवारण	30.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	125.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	125.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	125.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19.	महाभारत के रहस्य	30.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	50.00
22.	महाराजा-रघु का याग	30.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	35.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	35.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	35.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	40.00
29.	याग-मन्जूषा	40.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	30.00
32.	याग और तपस्या	60.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	35.00
35.	याग-चयन	40.00
36.	दिव्य-रामकथा	120.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	35.00
38.	दिव्य-ज्ञान	40.00
*39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	90.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	40.00
41.	आत्म-उत्थान	40.00
42.	तप का महत्व	40.00
43.	अध्यात्मवाद	40.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	40.00
45.	वैदिक-प्रभा	35.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	40.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	35.00
50.	आत्मा का भोजन	40.00
51.	साधना	35.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	80.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	80.00
57.	माता मदालसा	50.00
58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	80.00
59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	80.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	80.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	80.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएं	50.00
65.	प्रभु-दर्शन	50.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	80.00
67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	80.00
*69.	ब्रह्म की ओर	50.00
70.	ईश्वर मिलन	50.00
71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	80.00
72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	80.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध हैः–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं 09719622950
2. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
3. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294
4. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, A-59 पंचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
5. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
6. श्री अनिल त्यागी, सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-4165802
7. श्री आशीष त्यागी, डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0120-2642052
8. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पंचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
9. श्री विवेक त्यागी, 16ए, अशोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)। दूरभाष नं. 0122-2316196
10. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
11. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
12. पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
13. श्रीमती बाला, 251, दिल्ली गेट, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23282088
14. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे.पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
15. श्री सुमन कुमार शर्मा, जे-380, सैक्टर बीटा-2, ग्रेटर नोएडा, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09313530505
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

सूचना

सभी आजीवन/वार्षिक सदस्यों को 'यौगिक प्रवचन' पत्रिका प्रत्येक मास की 10/11 तारीख को प्रेषित की जाती है। किसी भी सदस्य को पत्रिका प्राप्त न होने की स्थिति में अपने पोस्ट मैन से एक सप्ताह के समय में जानकारी करें और फिर भी न मिलने की स्थिति में अपने सम्बन्धित पोस्ट ऑफिस में इस विषय में लिखित एक प्रार्थना-पत्र पोस्ट मास्टर साहब को दें जिससे कि पत्रिका न मिलने की खोज-बीन डाक विभाग द्वारा कराके आपकी पत्रिका आपको समय पर मिलनी प्रारम्भ हो जाए। कृपया प्रार्थना-पत्र की एक प्रति पर डाक विभाग द्वारा प्राप्ति के हस्ताक्षर व मोहर लगवाकर हमें भी भेज देवें जिससे कि इस विषय में यहाँ भी डाक विभाग को अवगत करा दिया जाए।

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ, अँकुर अपार्टमैन्ट, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

जब हम वेद की प्रतिभा को विचार-विनिमय करने लगते हैं तो कितना ही सँसार का विशेषज्ञ और व्याख्याता हो वह केवल सूर्य के एक सूक्ष्म से प्रकाश के तुल्य ही रहता है क्योंकि उसका ज्ञान अनन्त है और महान्‌ता से परणित है। आज जब हम प्रकृति में प्रभु का सन्निधान मात्र ही स्वीकार करते हैं और प्रकृति का स्वभाव उमड़ने लगता है परन्तु जब हम यह विचारते हैं कि मानव विज्ञान में क्या किसी भी आंगन में अभिमान्‌ का अधिकारी नहीं होता, वह अपने गौरव से यह नहीं उच्चारण कर सकता कि मैंने इस वस्तु को जाना है, उस पर वह अभिमान्‌ नहीं कर सकता उसे अधिकार ही नहीं है क्योंकि जो वस्तु मानव जानने का प्रयास करता है वह जो प्यारा देव प्रभु है वह इतना महान्‌ और अलौकिक है कि उसने उन वस्तुओं को तेरे विचारने से पूर्व उनका निर्माण कर दिया, उनको उत्पन्न कर दिया है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 45 : अंक : 536
मई 2017

मूल्यः
दस रुपये

POSTED AT N.D.PS.O ON 10/11-5-2017
Published on 5th day of the same month